वेद-चर्चा—

वेदमें शरीर-विज्ञान

(लेखक— श्री शिवपूजनसिंह कुशवाहा, एम. ए., साहित्यालङ्कार, सिद्धान्तवाचस्पति, कानपुर)

वेदोंमें अनेकों शारीरिक विज्ञानोंकी चर्चा है। अथर्ववेद १ में तो अनेक चिकित्सा पद्धतियोंका दिग्दर्शन है।

इसी प्रकार यजुर्वेदके एक मंत्रमें अद्‌भुत शरीर-विज्ञानकी ओर निर्देश है जिसको न समझ कर पौराणिक भाष्यकारोंने अश्लील व बीभत्स अर्थ किया है। कुछ लोगोंने महर्षि दयानन्दजीके भाष्य पर आक्षेप भी किया है। वह मंत्र यह है—

'पूषणं वनिष्ठुनान्धाहीन्त्स्थूलगुदया सर्पान्
गुदाभिर्विह्रुत आन्त्रैरपो वस्तिना वृषणमाण्डाभ्यां वाजिनं शेपेन प्रजाꣳ रेतसा चाषान्
पित्तेन प्रदरान् पायुना कूश्माञ्छकपिण्डैः।'
[यजुर्वेद अध्याय २५ मंत्र ७]

महर्षि दयानन्दजी सरस्वतीका भाष्य— '(पूषणम्) पुष्टिकरम् (वनिष्ठुना) याचनेन (अन्धाहीन्) अन्धान् सर्पान् (स्थूलगुदया) स्थूलयागुदया सह (सर्पान्) (गुदाभिः) (विह्रुतः) विशेषेण कुटिलान् (आन्त्रैः) उदरस्थैर्नाडीविशेषैः (अपः) जलानि (वस्तिना) नाभेरधोभागेन (वृषणम्) वीर्याधारम् (आण्डाभ्याम्) अण्डाकाराभ्यां वृषणावयवाभ्याम् (वाजिनम्) अश्वम् (शेपेन) लिङ्गेन (प्रजाम्) सन्ततिम् (रेतसा) वीर्येण (चाषान्) भक्षणानि (पित्तेन) (प्रदरान्) उदरावयवान् (पायुना) एतदिन्द्रियेण (कूश्मान्) शासनानि अत्र कशधातोर्मक्प्रत्ययोऽन्येषामपीति दीर्घश्च (शकपिण्डैः) शक्तेः संघातैः।

भावार्थ— येन येन यद्यत्कार्यं सिध्येत्तेन तेनाङ्गेन पदार्थेन वा तत्तत्साधनीयम्।

पदार्थ— हे मनुष्यो! तुम (वनिष्ठुना) मांगनेसे (पूषणम्) पुष्टि करनेवालेको (स्थूलगुदया) स्थूल गुदेन्द्रियके साथ वर्तमान (अन्धाहीन्) अन्धे सांपोंको (गुदाभिः) गुदेन्द्रियोंके साथ वर्तमान (विह्रुतः) विशेष कुटिल (सर्पान्) सर्पोंको (आन्त्रैः) आँतोंसे (अपः) जलोंको (वस्तिना) नाभिके नीचेके भागसे (वृषणम्) अण्डकोषको (आण्डाभ्याम्) आंडोंसे (वाजिनम्) घोडाको (शेपेन) लिङ्गसे और (प्रजाम्) सन्तानको (रेतसा) वीर्यसे (पित्तेन) पित्तसे (चाषान्) भोजनोंको (प्रदरान्) पेटके अंगोंको (पायुना) गुदेन्द्रियसे और (शकपिण्डैः) शक्तियोंसे (कूश्मान्) शिखावटोंको निरन्तर लेओ।

भावार्थ जिस जिससे जो जो काम सिद्ध हो उस उस अङ्ग वा पदार्थसे वह वह काम सिद्ध करना चाहिए।२

पौराणिकोंके आक्षेप—

विद्यावारिधि पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र लिखते हैं— 'इस मंत्रमें दयानन्दने स्थूल गुदासे अन्धे सर्पोंको लेना लिखा है इत्यादि प्रकरण और बुद्धि विरुद्ध ऐसे लेख हैं जिनको देखकर हँसी आती है।'३

जैनी पं. अजितकुमारजी शास्त्री आक्षेप करते हैं— "स्वामीजीकी पांचवीं गप्प भी सुनिये—···महाशयजी!

१ द्रष्टव्य— स्वामी ब्रह्ममुनिजी विद्यामार्तण्ड (पं. प्रियरत्नजी आर्ष) कृत 'अथर्ववेदीय चिकित्सा पद्धति' पुस्तक [श्रीमती सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्लीसे प्राप्य]

२ 'यजुर्वेद-भाष्यम्' (तृतीयो भागः), द्वितीयावृत्ति, पृष्ठ २२१-२२२

३ 'शुक्ल यजुर्वेद संहिता' मिश्र भाष्य, उत्तरार्ध, पृष्ठ १०४०, [संवत् १९५९ वि. में खेमराज श्रीकृष्णदास, श्री वेंकटेश्वर यन्त्रालय, बम्बई द्वारा प्रकाशित].

इस फिलासफीका भी मुलाहिजा कीजिए। अण्डकोशसे घोडे मिल जाते हैं, गुदासे अन्धे सांप तथा ज्यादा टेढे साँपोंको ले लीजिये, ताकतोंसे शिखावट मिल जायेंगे। यह मन्त्र भी बहुत भारी लाभदायक है। घोडोंके लिए लोगोंको हजारों लाखों रुपए खर्च करने पडते हैं, सो जनाब ! सारा खर्च बच जायगा। इस अद्भुत रसायनसे जिसको घोडेकी जरूरत हुई चट अन्डकोषसे ले लिया। किन्तु यह कुछ मालूम न हुआ कि ये अण्डकोष किस महाशयके हैं? सो हमारे दयालु आर्यसमाजी भाई बतौर परोपकारके यह भी बतला दें तथा सबसे अच्छा यह हो कि वे प्रयोग द्वारा अण्डकोषसे घोडे लेकर एकबार अवश्य बतला दें। गुदासे अन्धे सांप और ज्यादा टेढे सांप कैसे मिलेंगे और वह गुदा किसकी होगी, यह बात भी लगे हाथ बतला दी जावे तो बहुत अच्छा हो। इस गप्पके समझनेमें भी बुद्धिमानोंकी बुद्धि और डाक्टरोंकी डाक्टरी बेकाम हो जाएगी।" ४

मुरादाबाद निवासी श्री जगन्नाथदास— "१८– अध्याय २५ मं. ७ का पदार्थ सर्वथा अश्लील अकथनीय है।" ५

पुनः— "अध्याय २५ पृष्ठ ३७६ स्थूल गुदेन्द्रियके साथ अन्धे सांपोंको इत्यादि सर्वथा अश्लील और असमंजस लेख स्वामीजीकी कपोल कल्पना है जो कोई ऐसे लेखोंको वस्तुतः वेदका अर्थ जानेगा निःसन्देह वेदसे श्रद्धा रहित हो जायगा।" ६

श्री कालूराम शास्त्रीका आक्षेप— "इसके आगे यजुर्वेद अध्याय २५ मंत्र ४ में स्वामीजी अपने शिष्योंको शिक्षा देते हैं कि अन्धे सांपोंको गुदासे पकडा करें गुरु हो तो स्वामी कैसा हो और शिष्य हों ऐसे ही हों जैसे हमारे दयानन्दीभाई, मगर ऐसे धार्मिक दयानन्दी कम हैं जो इस कार्रवाईको अमलमें लाते हैं।" ७

महर्षि दयानन्दजी सरस्वतीके भाष्यकी विवेचना

यजुर्वेदके इस २५ वें अध्यायके आरम्भसे ही शरीरके अङ्गोंका वर्णन किया गया है– यथा 'शादंदद्भिरवका-न्दन्त……' (मनु. २५।१) दांतोंसे छेदन किया जाता है। इस प्रकार मुख, ग्रीवा आदिका वर्णन करते हुए पेटके आँतोंका वर्णन किया है।

"(अन्धाहीन्) के अर्थ 'अन्धान् सर्पान्' महर्षिजीने किया है। 'अन्धाहीन्' इसमें 'अहीन्' शब्दके अर्थ 'सर्पान्' लिए गए हैं। 'अहि' शब्दके कोषादिमें अनेकार्थ हैं यथा—

"आङिश्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्च अश्चि। अहि। अहन्तीति अहिर्मेघः सर्पो वा"। (निघण्टु १।१०) में 'अहि' मेघ अर्थमें (निघण्टु १।१२) में अहि उदक अर्थमें।

यहाँ 'अन्धाहीन् अन्धान् अहीन् इव अर्थात् कुटिलनाडी विशेषान्के अर्थमें जानो।

(पूषणम्) बलकारक क्रिया वा वस्तुको। (वनिष्ठुना) ग्रहण करनेकी इच्छासे धारण करो। (अन्धाहीन्) अन्ध सर्पोंकी तरह कुटिल आंतोंको। (स्थूलगुदया) स्थूल गुदासे सम्बन्ध रखनेवाली (जानो)। (सर्पान्) सर्पवत् कुटिल (आँतों) की (गुदाभिः) जो गुदाके साथ हो (अर्थात् दोनों ओरसे) (विह्रुतः) विशेष कुटिल हैं (जानो और उन) (आन्त्रैः) पेटमें ठहरनेवाली आंतोंसे यथायोग्य काम लो (आपो) अपमय अंश (मूत्र) को (वस्तिना) मूत्रा-शयसे धारण करो (वृषणम्) वीर्यके आधारको (आण्डा-भ्याम्) वीर्य सींचनेवाले अण्डकोषोंसे धारण करो अर्थात् यह समझो कि वीर्यको अण्डकोष सेंचन तथा धारण करते हैं। (वाजिनम्) वेगको (शेपेन) लिंगसे अर्थात् वेग लिंगसे धारण होता है यह जानो (प्रजाम्) सन्तानको (रेतसा)

---

४ "आर्यसमाजकी डबल गप्पाष्टक" पृष्ठ ८-९ (सन् १९३९ ई. में मंत्री श्री चम्पावती जैन पुस्तकमाला प्रकाशन विभाग, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ, अम्बालाछावनी द्वारा प्रकाशित, द्वितीय संस्करण)

५ "दयानन्द हृदय" पृष्ठ १५ (संवत् १९८५ वि. में श्री कालूराम शास्त्री, अमरौधा [जि. कानपुर] द्वारा प्रका-शित, द्वितीयवार)

६ "दयानन्दके यजुर्वेद भाष्यकी समीक्षा" पृष्ठ ४७ (संवत् १९७१ वि. में ब्रह्मप्रेस, इटावा द्वारा मुद्रित व प्रका-शित, द्वितीयवार)

७ "दयानन्दकी विद्वत्ता" पृष्ठ १४ (सन् १९२८ ई. में सनातन धर्म पुस्तकालय, इटावा द्वारा प्रकाशित, पञ्चमवार)

वीर्यसे अर्थात् वीर्यसे सन्तानका शरीर होता है यह जानो (चाषान्) भोजनोंको (पित्तेन) पित्त अर्थात् पाचकशक्ति वा जठराग्निसे पचाओ (प्रदरान्) पेटके अंगों अर्थात् आमाशय, प्लीहा, यकृत और आंतोंको (पायुना) गुदाके यथार्थ रीतिसे काम करनेसे धारण करो (कूश्मान्) गति और शासन अर्थात् सूचना वा ज्ञानको (शकपिण्डैः) मज्जातन्तुके समूह वा शक्ति संघातसे धारण करो।

इस मंत्रमें निम्नाङ्कित बातोंका उल्लेख है—

(क) बलका एक मुख्य नियम।

(ख) छोटी और बडी आँतोंका वर्णन।

बडी आँतें स्थूल गुदासे सम्बन्धित हैं और छोटी आँतें साँपकी तरह पेचदार विशेष कुटिल हैं।

(ग) वस्ति और सूत्र।

(घ) शिश्नप्रदेश (गुह्येन्द्रिय)।

(ङ) पाचनशक्ति।

(च) शकपिण्ड ही गति और शासनका स्रोत हो।'

डाक्टरी पुस्तकोंसे पुष्टि

Intestine = पेटकी आंतोंका वर्णन—

The small intestine (छोटीं आंतोंकी व्याख्या)-

' The small intestine is about twenty five feet long. It begins at the right hand end of the stomach, just under the liver, and ends down near the right groin It is divided into three parts-the duodenum, the jejunum and the ileum. ' 8

अर्थात्– ' छोटी आँत लगभग २५ फीट लम्बी है। यह पाकस्थलीके दक्षिण हस्तके सिरेसे प्रारम्भ होती है, ठीक यकृतके नीचेसे और दाहिने पेट और जांघके बीचके भागके अन्तमें नीचेकी ओर जाकर समाप्त होती है। यह तीन हिस्सोंमें विभाजित है– ड्यूनम, जेजुनम, इलीयम।'

1. DUODENUM— The duodenum is the first Part, that which is joined to the stomach, is about eight or ten inches long.

2. JEJUNUM— " The jejunum (from a word which means empty because it is generaly found empty after death) Comes next and is about eight feet long. "

3. ILEUM— " The ileum (from a word which signifies to twist and so called from its numerous Coils) includes the remaining ten or twelve feet of the small intestine. " 9

अर्थात्– ' ड्यूडिनम– पहला हिस्सा है जो कि पाकस्थलीसे सम्बन्धित है और लगभग आठ या दश इंच लम्बी है।

जेजुनम– (यह शब्द रिक्त अर्थमें है जो कि मृत्युके पश्चात् इसको रिक्त ही पाया गया) यह द्वितीय है और लगभग आठ फीट लम्बी है।

इलियम (यह उस शब्दसे निकला है जो मरोडनेके अर्थमें है, और इसलिए यह उसका नाम पडा कि इसके बहुतसे लच्छे या कुंडलियाँ होती हैं)। यह उस छोटी आंत से सम्बन्ध रखती है जो कि दश या बारह फीट लम्बी है।'

The large intestine (बडी आंत)—

" The large intestine extends from the end of the small intestine near the right groin, to the bowels or the anus. It is about five feet in length, and has the folliowing courses. "

अर्थात्– यह बडी आंत छोटी आंतके सिरेसे फैलती है– आरंभ होती है और दाहिने पेट और जांघके बीचका भागतक पहुँचती है। यह आंत, आंतडियों या गुदासे संबंध रखती है। यह लगभग पांच फीटके लम्बी और निम्न प्रकारसे इसकी गति है—

" First it mounts upward from the place of begining to the underside of the liver, passes directly across to the left side abdominal cavity where it takes a sudden turn, known as the sigmoid flexer, and there becomes the rectum, or straight intestine, which is the last portion, and ends in the anus. "

८ ' Human body ' (ह्यूमन बॉडी) PP 52 तुलना करो, पं. शिवशर्मा, महोपदेशक कृत ' सत्यार्थ निर्णय ' (प्रथम खण्ड) प्रथम संस्करण, पृष्ठ ३१३.

९ वही.

*

अर्थात्– 'सबसे प्रथम यकृतके भीतरी भागके आरम्भसे यह ऊपरको चढती है और पेटके छिद्रके बायीं ओरको पार करती हुई जाती है जहाँपर वह एकदम लौट पडती है जिसको 'सिगमोइडकज' कहते हैं, वहाँपर यह रेक्टम अथवा सीधी आंत बन जाती है, जो कि अन्तिम हिस्सा है और गुदातक जाकर समाप्त हो जाता है।'

"Mounting upwards in the right side of the abdomen, passing across the upperpart and then turning on the left side the large intestine folds itself around them. The large intestine is divided into three parts– the caecum, the colon, and the rectum. derived from the word which means blind, is the first part of the large intestine, and extends downwards from the point where the small intestine enters the large pouch, generaly about two and half inches long and wide."

अर्थात्–'पेटके दाहिनी ओरसे ऊपरको चढती हुई ऊपरके भागको जाती हुई, और वाम ओरको लौटती हुई, बडी आँत इनके चारों ओर लिपट जाती है। यह बडी आंत तीन भागोंमें विभक्त है– सीकम, कोलन और रैक्टम। यह रैक्टम शब्द उस शब्दसे निकला है जो अन्धेके × अर्थमें है। यह बडी आंतका पहला हिस्सा है और नीचेकी ओरको फैला हुआ है। उस स्थानतक जहाँपर छोटी आंत बडी थैलीतक जाकर पहुँचती है। यह विशेषतया लगभग अढाई इंच लम्बी और चौडी है।'

"The colon is all that part of the large intestine which ascends from the caecum to the abdominal cavity, runs cross the left of the abdomen, and descends on the left side to the pelvis, where it terminates in the rectum. These three devisions of the colon are known as ascending colon, the transverse colon and the descending colon. The rectum, the last six or eight inches of the intestine, is so called from a word which means straight because it is less flexous than any other part of the intestinal conal. It begins at the upper part of tne OS sacreem, where the bolen ends and going down obliquely, it is tied to the extremeties of the cocoyx by arcolar tissue behind, and is connected with the neck of the bladder in men. but in women with the vagina before; whence arises the sympathy between those parts," 10

'उपर्युक्त अंग्रेजी लेखकका वही तात्पर्य है जो वेदमें बताया है। 'रैक्टम' वह आंत है जो अन्धे साँपके समान है यह सारे नाम वेदोंसे ही लेकर रखे गए हैं।'

डा० रॉबर्ट हौडन, एम्. ए., डी. एस. सी.; एम्. बी. सी. एम्., डरबन यूनिवर्सिटीमें एनाटोमीके प्राचार्य लिखते हैं—

"The caecum, commencement of the large intestine, is the large blindpouch situated between the colic valve. Its blind-end is directed downward and its open end upwards communicating directly with the colon, of which this blindpouch appears to be the beginning or head and hence the old name of caput caccumeoli was applied to it." 11

वेदमंत्रमें 'स्थूलगुदया' यह एकवचन है और 'गुदाभिः' यह बहुवचन है। 'स्थूलगुदा' उस आंतको कहते हैं जिसका सिरा मलको बाहर निकालता है। इस अन्तिम सिरेको ही कांच कहते हैं। डाक्टरीमें इसका नाम 'Blind pouch' अंधी आंत रक्खा हुआ है। वेदने इसको अन्धाहीन् कहा। इस आंतसे कई छोटी छोटी आंतें सम्बन्धित हैं इसलिए 'अन्धाहीन्' बहुवचन कहा है। 'गुदाभिः' यह बहुवचन है। कुटिल सर्प और केवल सर्पका इससे सम्बन्ध है। डाक्टरी, कुटिल सर्पको, Coilae=लच्छा बांधे हुए साँप कहती है। वेद विन्हुत आन्त्रैः कहता है। डाक्टरी Straight

× वेदने इसी आंतको 'अंधासाप' कहा है— (लेखक)

१० "Human body" PP. 52–54.

११ "Anatomy" ('एनाटोमी' पुस्तक) PP. 1098 तुलना करो 'सत्यार्थ–निर्णय' प्रथम खण्ड, पृष्ठ ३१७–३१८.

intestine सीधी आंत कहती है। वेद 'सर्पान्' ऐसा कहता है।'

अब विज्ञ पाठक भलीभाँति समझ सकते हैं कि वेदमें शारीरिक विद्या-सम्बन्धी आँतोंकी चर्चा है न कि गुदासे अन्धे साँपोंको पकडनेका वर्णन है।

जिन वेदमंत्रोंसे अनादि शारीरिक विद्या सिद्ध होती है उनमें पोंगापंथी पौराणिकों व जैनियोंको अश्लीलता दीख पडती है!!

आक्षेपोंके निराकरण

पं. ज्वालाप्रसाद मिश्रने केवल 'प्रकरण और बुद्धि विरुद्ध '... लिखा है। यह नहीं लिखा कि क्या बुद्धि विरुद्ध है। मिश्रजीने जो टीका की है वह नितान्त अश्लील व प्रकरण विरुद्ध है।

श्री अजितकुमार शास्त्रीके आक्षेपोंका उत्तर स्वामी कर्मानन्दजी (दण्डी) ने 'जैन भ्रमोच्छेदन अर्थात् आर्यसमाजियोंकी गप्पाष्टकका उत्तर' नामक पुस्तिकामें दिया है १२; श्री जगन्नाथदासने केवल अश्लील और असमंजस लेख लिखा है जिसको वे स्वयं न समझ पाए; श्री कालूराम शास्त्रीके आक्षेपोंके उत्तर पं. व्रजमोहन झा ने 'कालूराम मुख-मर्दन' १३ तथा पं. जितेन्द्रशर्माने 'कालूरामकी कालिमा' १४ नामक पुस्तिकाओंमें दिया है।

पं. कालूराम शास्त्रीकी पुस्तिकामें "यजुर्वेद अध्याय २९ मंत्र ४......" मुद्रित है जो नितान्त अशुद्ध है। मंत्र ४ नहीं वरन् ७ हैं। सोलह पृष्ठकी पुस्तिकामें यह भयंकर अशुद्धि है और आक्षेप भी ऊटपटांग है।

पं. ज्वालाप्रसाद मिश्र, पं. कालूराम शास्त्री प्रभृति पौराणिक श्री महीधराचार्यके भाष्यको परम प्रामाणिक मानते हैं। उनका भी भाष्य देखिये—

"वनति सम्भजति वनिष्ठुः स्थूलान्त्रं तेन पूषणं देवं प्रीणामि। गुदं त्वपानं पायुर्नैत्यमरः (२।६।७३), स्त्रीत्वं छान्दसम् स्थूला चासौ गुदा च स्थूलगुदा तस्याः स्थूल भागेन अन्धाहीन् प्रीणामि। अन्धाश्च ते अहयश्च सर्पास्तान्। सर्पान् गुदाभिः स्थूलगुदातिरिक्तैर्गुदभागैः सर्पान् प्रीणामि। विहूरुत आन्त्रैः आन्त्रं पुरीतदित्यमरः (२।६।६६) अम गतौ भजते शब्दे अम्रति भजत्यनेनान्नमित्यन्त्रम् अन्ते भवा आन्त्राः अन्त्रसम्बन्धिनो मांसभागाः तैर्विहूरुतो देवान् प्रीणामि। अपो वस्तिना वस्तिर्नाभेरधोद्वयोरित्यमरः (२।६।६३) वसति मूत्रं यस्मिन् स वस्तिः नाभेरधो वर्तमानं मूत्रपुटं तेनापो देवताः प्रीणामि। मुष्कोऽण्डोवृषणः कोशः (अमर० २।६।७६) अण्ड एवाण्डः ताभ्यां लिङ्गोभयपार्श्वस्थाभ्यां मांसपिण्डाभ्यां वृषणं देवं प्रीणामि। शेपो लिङ्गं तेन वाजिनं देवं प्रीणामि शिश्नो मेढ्रो मेहनशेपसी इति (२।६।७६) अमरः। शि निशाने शिनोति भगमिति शेपः सान्तोऽदन्तश्च। प्रजां रेतसा शुक्रं तेजो रेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि चेति (२।६।६२) अमरः रीङ् स्रवणे रियते स्रवति रेतो वीर्यं तेन प्रजां देवतां प्रीणामि। मायुः पित्तं पतति स्रवते पित्तं धातुविशेषस्तेन चाषान् देवान् प्रीणामि। पातिमलोत्सर्गमिति पायुर्गुदमुक्तातिरिक्तं तेन गुदतृतीयभागेन प्रदरान् देवान् प्रीणामि। कूश्मान् शकपिण्डैः। शको देशे नृपे विशि। विशिविष्ठायां शकस्य विष्ठायाः पिण्डैः कूश्मान् देवान् प्रीणामि।" १५

अर्थात्– यजु० के २५ वें अध्यायके प्रारम्भमें ही श्री महीधराचार्य कहते हैं—

"...तत्र शादं दद्भिरित्यादि पृथिवीं त्वचेत्यन्तः संहिताभागो ब्राह्मणं न मन्त्राः। शादादयो देवाः दन्ताद्यङ्गानि।"

यहाँपर 'शाद दद्भिः' से लेकर 'पृथिवी त्वचा०'... मन्त्र ९ तक संहिता भाग है न कि ब्राह्मण भाग। शाद

---

१२ सन् १९३२ ई. में पं. महेन्द्रशास्त्री आर्यसमाज, अजमेर द्वारा प्रकाशित, प्रथमावृत्ति।

१३ संवत् १९७२ वि. में आर्य पुस्तकालय, कुरसवाँ, कानपुर द्वारा प्रकाशित, प्रथमावृत्ति।

१४ संवत् १९७३ श्रावणमें ब्रह्मन प्रेस, जगाधरीमें मुद्रित व लेखक द्वारा प्रकाशित, प्रथमवार।

१५ "शुक्लयजुर्वेदसंहिता श्री मदुव्वटाचार्य विरचित मन्त्रभाष्येण श्री मन्महीधराचार्य विरचित वेददीपेन च सहिता" तृतीय खण्डम्, पृष्ठ १२३३-१२३४। (सन् १९१३ ई. में चौखम्बा संस्कृत बुक डिपो, वाराणसी सिटी द्वारा प्रकाशित।)

आदि देवता हैं और दन्त आदि अङ्ग हैं। उनके लिखनेका तात्पर्य यह है कि– इस २५ वें अध्यायके एक मंत्रसे ९ मंत्र तक पशुओंके विशेष विशेष अङ्गोंसे विशेष विशेष देवताओंके निमित्त स्वाहान्त शब्दोंसे आहुतियाँ देनी चाहिए। 'शाद' कोई देवता है, इसके लिए घोडेके दाँतोंकी आहुति दे। 'अदका' देवता है, उसके निमित्त दाँतोंकी जड मसूडोंको आहुति दे। इसी प्रकार इन नौ मंत्रोंमें घोडेके अङ्गोंको काट काट कर विशेष देवताओंका नाम लेकर आहुतियां डाले।

अब ७ वें मंत्रका जो भाष्य है उसका तात्पर्य है–'मोटी मोटी आंतोंसे पूषा देवताको प्रसन्न करता हूँ। घोडेकी मोटी मोटी गुदासे अन्धे सांपोंको प्रसन्न करता हूँ। अण्डकोषोंसे वृषभ देवताको प्रसन्न करता हूँ। घोडेके लिङ्ग (प्रजननेन्द्रिय) से वाजिन देवताको प्रसन्न करता हूँ। ... ...

विद्यावारिधि पं. ज्वालाप्रसाद मिश्र— 'पदार्थ– (वनिष्ठुना) स्थूलांत्रसे (पूषणं) पूषा देवताको प्र० (स्थूल गुदया) गुदाके स्थूल भागसे (अन्धाहीन्) अन्धेसर्पोंकी प्र० (गुदाभिः) स्थूल गुदाके अतिरिक्त भागसे (सर्पान्) सर्पोंको प्र० (आन्त्रैः) अंत्र सम्बन्धी मांस भागसे (विन्हुतः) विन्हुत देवको प्र० (वस्तिना) नाभिके नीचेके भागसे (अपः- जल देवको (आण्डाभ्याम्) अण्डकोषोंसे (वृषणं) वृषणको (शेपेन) मेढ्रसे (वाजिनं) वाजीको (रेतसा) वीर्यसे (प्रजाम्) सन्ततिको (पित्तेन) पित्तसे (चापान्) चाषदेवको (पायुना) गुदके तीसरे भागसे (प्रदरान्) प्रदरोंको (शकपिण्डैः) लीदके पिण्डोंसे (कूश्मान्) कूश्मोंको प्रसन्न करता हूँ।' १६

विद्यावारिधिजीने इसी भाष्यमें महर्षि दयानन्दजी सरस्वतीके भाष्यपर उपालम्भ किया है, पर इनके व महीधरके भाष्यको पढकर किस व्यक्तिकी वेदोंपर श्रद्धा हो सकती है? क्या वेदोंका महत्त्व ऐसी ही अनर्गल बातोंसे रहेगा? ऐसे अशुद्ध, भ्रष्ट, वाममार्ग प्रतिपादक और अश्लील वेदार्थको देखकर ही करोडों सूत्रधारी आर्य सन्तान हमसे पृथक् हो गए।

वेदोंमें अश्वके वधका सर्वथा ही निषेध है—

इमं मा हिंसीरेकशफं पशुं कनिक्रदं वाजिनं वाजिनेषु।
(यजु. १३।४८)

इस मंत्रकी व्याख्यामें, शतपथ ब्राह्मणमें, निम्नलिखित लेख मिलता है। यथा—

एक शफो वा एष पशुर्यदश्वः, तं मा हिंसीरिति।
(शतपथ ब्राह्मण ७।५।२।३३)

इसका अभिप्राय यह है कि मंत्रमें, निश्चयसे एक शफ शब्दसे अश्वका ग्रहण है। इसलिए एक शफवाले पशु अर्थात् अश्वकी तू हिंसा न कर। १७

महर्षि दयानन्द सरस्वती— 'हे राजन्! तू (वाजिनेषु) संग्रामके कामोंमें (इमम्) इस (एक शफम्) एक खुरयुक्त (कनिक्रदम्) शीघ्र विकल व्यथाको प्राप्त हुए (वाजिनम्) वेगवाले (पशुम्) देखने योग्य घोडे आदि पशुको (मा) मत (हिंसीः) मार। ...'

भावार्थ— 'मनुष्योंको उचित है कि एक खुरवाले घोडे आदि पशुओं और उपकारक वनके पशुओंको भी कभी न मारें। जिनके मारनेसे जगत्की हानि और न मारनेसे सबका उपकार होता है उनका सदैव पालन–पोषण करें और जो हानिकारक पशु हों उनको मारें।' १८

स्वयं पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र ही इस मंत्रका अर्थ करते हुए लिखते हैं— 'हे अग्ने (इमम्) इस (कनिक्रदम्) अत्यन्त हींसनेवाले (वाजिनेषु) वेगवालोंमें (वाजिनम्) वेगवाले (एक शफम्) एक खुरवाले घोडे 'एक शफो वा एष पशुर्यदश्व' [७–५–२–३३ इति श्रुतेः] (पशुम्) पशुको (मा) मत (हिंसीः) पीडा देना। ...' १९

---

१६ शुक्लयजुर्वेद मिश्र भाष्य, उत्तरार्ध, पृष्ठ, १०३९–१०४० [संवत् १९५९ वि. में श्रीवेंकटेश्वर स्टीम यन्त्रालय, बम्बईमें मुद्रित व प्रकाशित]

१७ 'वैदिक पशुयज्ञ–मीमांसा' प्रथम संस्करण, पृष्ठ ४३

१८ यजुर्वेद भाष्यम्, द्वितीयो भाग, तृतीयावृत्ति, पृष्ठ २२८

१९ 'यजुर्वेद संहिता' मिश्र भाष्य सहित, प्रथम भाग, पृष्ठ ५६–५५७ [संवद् १९५९ वि. में श्री वेङ्कटेश्वर स्टीम यन्त्रालय, बम्बई द्वारा मुद्रित व प्रकाशित]

जब वेदमें स्पष्ट रूपसे अश्ववधका निषेध है और स्वयं मिश्रजी भी अपने भाष्यमें स्वीकार कर रहे हैं तब यजु० २५।७ के भाष्यमें जो महीधर और मिश्रजीने अर्थ किया है वह वेदकी अन्तः साक्षीसे ही खण्डित हो जाता है।

चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेव शर्मा 'विद्यालङ्कार' मीमांसातीर्थ का भाष्य भी महर्षि दयानन्दजीके भाष्यसे मिलता जुलता है—

'भा०-(वनिष्टुना पूषणम्) स्थूल आँतोंसे पूषा नाम अधिकारीकी तुलना करो। (स्थूल गुदया अन्धाहीन्) अन्धे साँपोंकी स्थूल गुदाके भागसे तुलना करे। (गुदाभिः सर्पान्) गुदाओंसे साँपोंकी तुलना करो। (आन्त्रैः विन्हुतः) शरीरकी आँतोंसे वन्य कुटिलगामी सर्पोंकी तुलना करो। (वस्तिना अपः) राष्ट्रके भीतर जल, जलाशयों, नदियोंकी वस्ति भागसे तुलना करो। (वृषणमाण्डाभ्याम्) वर्षणकारी मेघकी वीर्य-सेचन-समर्थ अण्ड कोशोंसे तुलना करो। (वाजिनम्) वीर्यवान् बलवान् पुरुषकी शरीरमें (शेपेन) पुल्लिंगसे तुलना करो। (रेतसा प्रजाम्) राष्ट्रकी प्रजाकी शरीरस्थ वीर्यसे तुलना करो। (चाषान् पित्तेन) खाने योग्य पदार्थोंकी शरीरस्थ पित्त पदार्थसे तुलना करो। (पायुना प्रदरान्) शरीरस्थ पायु या गुदामार्गसे राष्ट्रके भीतर विशेष फटे फटे दरार भागोंकी तुलना करो। (कूश्मान्) 'कूश्म' अर्थात् शासकपदाधिकारी अथवा अग्निके बलसे फेंके जानेवाले गोलों और अग्निमय पदार्थोंकी (शकपिण्डैः) शक्तिमान् पिण्डोंके समान शरीरमें स्थित विष्ठाके पिण्डोंसे तुलना करो।'

अथवा— (पूषणम्) पोषक पुरुषको उससे (वनिष्टुना) याचना द्वारा शक्ति और अन्न प्राप्त करो (स्थूल गुदया सहितान् अन्धाहीन् गुदया सर्पान्) मोटी गुदासे युक्त अंधे सांपोंको और गुदा भागसे साधारण सांपोंको पकड कर वश करो। (आन्त्रैः विन्हुतः) विशेष कुटिल सांपोंको उनकी आंतोंसे वश करो। (वस्तिना अपः) वस्ति क्रिया द्वारा जलोंको प्राप्त करो। (अण्डाभ्याम् वृषणम्) अण्डकोषोंसे वीर्याधार स्थानको पूर्ण करो। (शेपेन वाजिना) लिङ्ग भागसे वीर्यवान् अश्व या वीर्यवान् पुरुषकी परीक्षा करो। (रेतसः) वीर्यसे (प्रजाम्) प्रजाको प्राप्त करो। (पित्तेन) पित्तके बलसे (चाषान्) युक्त पदार्थोंको पचावो। (प्रदरान् पायुना) गुदा भागसे पेटके भीतर भागोंको स्वच्छ और बलवान् करो। (शक पिण्डैः) शक्तिके संघोंने (कूश्मान्) शासन बलोंको प्राप्त करो।' २०

इनके अर्थमें भी शारीरिक विज्ञानका प्रदर्शन है।

इन उपर्युक्त सभी विवेचनोंके आधार पर यह निश्चित रूपसे कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्दजी सरस्वतीका भाष्य उचित है। पौराणिकोंने जो भ्रान्तियाँ फैलाई हैं यह उन लोगोंके कलुषित हृदयका उद्‌गार है।

महर्षि दयानन्दजीके भाष्यमें 'शरीर विज्ञान' की चर्चा स्पष्ट रूपसे दृष्टिगोचर हो रही है।

ø ø ø

२० 'यजुर्वेद-संहिता भाषाभाष्य (द्वितीयखण्ड), द्वितीयावृत्ति, पृष्ठ ३४३-३४४.